अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट

द हिन्दू (21 Nov.)

संदर्भ

- हाल ही में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय त्रिपुरा एवं पूर्वोत्तर राज्यों के पर्यटन मंत्रालयों के साहचर्य में त्रिपुरा के अगरतला नगर में सातवाँ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट आयोजित कर रहा है।

मुख्य तथ्य

- भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट का आयोजन होता है जिसका उद्देश्य उस क्षेत्र में पर्यटन की संभावना को भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाना है।
- इस मार्ट में आठ पूर्वोत्तर राज्यों के पर्यटन से जुड़े हुए व्यवसाई इकठ्ठा होते हैं।
- इस मार्ट का आयोजन इस प्रकार होता है जिससे कि सभी क्रेता, विक्रेता, मीडिया, सरकारी एजेंसियाँ और अन्य पर्यटन से जुड़े हुए लोगों के बीच विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा प्राप्त हो।
- अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट के लिए स्थल का चयन पूर्वोत्तर राज्यों में बारी-बारी से होता है। पहले इस प्रकार के मार्ट गुवाहाटी, तवांग, शिलोंग, गंगटोक और इम्फाल में हो चुके हैं।

भूमिका

- भारत के पूर्वोत्तर में ये 8 राज्य हैं- अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम। इन सभी राज्यों में पर्यटन के योग्य कई आकर्षक स्थल एवं उत्पाद उपलब्ध हैं।
- यहाँ का धरातल, यहाँ के पेड़ पौधे, यहाँ के पशु-पक्षी, यहाँ के त्यौहार, यहाँ की कलाएँ और यहाँ के शिल्प भाँति-भाँति के हैं। यहाँ बहुत प्रकार के समुदाय निवास करते हैं जिनकी प्राचीन परम्पराएँ और जीवन शैलियाँ देखने लायक होती हैं। इन कारणों से इस क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं।

मार्ट के आयोजन का महत्त्व

- अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट में देश-विदेश के क्रेता और मीडिया प्रतिनिधि जमा होते हैं और वे पूर्वोत्तर क्षेत्र के विक्रेताओं से साक्षात रूप से (B2B) मिलते हैं।
- इस प्रकार यहाँ के पर्यटन व्यवसायियों को देश के और देश के बाहर के क्रेताओं से सम्पर्क हो जाता है। परिणामत: क्षेत्र के पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

नगर गैस वितरण परियोजना

फाइनेंसियल एक्सप्रेस, इकनॉमिक टाइम्स (21 Nov.)

संदर्भ

- हाल ही में भारत के 129 जिलों में नगर गैस वितरण परियोजनाओं के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शिलान्यास करेंगे।
- इन परियोजनाओं के माध्यम से देश के 26 राज्यों/केंद्र-शासित क्षेत्रों में रहने वाली देश की लगभग आधी जनसंख्या को गैस की आपूर्ति की जायेगी।
- परियोजनाओं के लिए की गई नीलामी के 9वें चक्र में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (Petroleum and Natural Gas Regulatory Board – PNGRB) ने 65 भौगोलिक क्षेत्रों में इन्हें संचालित करने का निर्णय लिया है।

प्राकृतिक गैस ही क्यों?

- प्राकृतिक गैस कोयले और तरल ईंधनों की तुलना में पर्यावरण के लिए अधिक अनुकूल होता है और साथ ही यह अधिक सुरक्षित एवं अधिक सस्ता भी होता है।

- प्राकृतिक गैस पाइपों के माध्यम से ठीक उसी प्रकार से मुहैया कराई जाती है जैसे नलकों से पानी। इसके लिए रसोई में सिलेंडर रखने की आवश्यकता नहीं होती और इस प्रकार जगह भी बचती है।
- प्राकृतिक गैस (जैसे CNG) पेट्रोल की तुलना में 60% और डीजल की तुलना में 45% सस्ती होती है।
- यदि बाजार दाम पर बिकने वाली LPG और PNG से इसकी तुलना की जाये तो प्राकृतिक गैस 40% सस्ती होती है और लगभग सब्सिडी वाले LPG के बराबर होती है।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (PNGRB)

- पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (PNGRB) की स्थापना पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड अधिनियम, 2006 के अंतर्गत हुई है।
- इस बोर्ड का काम उपभोक्ताओं और पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पादों और प्राकृतिक से सम्बन्धित विशिष्ट गतिविधियों में लगे अधिष्ठानों की हितों की रक्षा करना है।
- बोर्ड का एक लक्ष्य इन उत्पादनों से सम्बन्धित प्रतिस्पर्धात्मक बाजारों को प्रोत्साहन देना भी है।
- यह बोर्ड पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पादों एवं प्राकृतिक गैस के शोधन, प्रसंस्करण, भंडारण, परिवहन, वितरण, विपणन एवं विक्रय को विनियमित करता है जिससे कि पूरे देश में इनकी पर्याप्त और निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।
- यह बोर्ड कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के उत्पादन का विनियमन नहीं करता है।

सेंटिनल द्वीप

इंडियन एक्सप्रेस (21 Nov.)

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में 16 नवम्बर, 2018 को एक अमेरिकी व्यक्ति अंडमान निकोबार द्वीपसमूह के सेंटिनल द्वीप के आदिवासियों द्वारा मार दिया गया।

- सेंटिनल द्वीप एक सुरक्षित क्षेत्र (protected zone) है जहाँ उस व्यक्ति ने अवैध रूप से प्रवेश किया था।

सेंटिनल द्वीपवासी कौन हैं?

- यह एक नीग्रो वर्ग की जनजाति है जो अंडमान के उत्तरी सेंटिनल द्वीप पर निवास करती है।
- शारीरिक और भाषागत समानता के आधार पर इन आदिवासियों को जारवा आदिवासियों से जोड़ा जाता है। ऐसा मानना है कि इन आदिवासियों की जनसंख्या 150 से कम और सम्भवत: 40 ही है।
- इस द्वीप में पाए गये रसोई के अवशिष्टों की कार्बन डेटिंग से भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने पता लगाया है कि इस द्वीप में 2,000 वर्ष पहले से ही आदिवासी निवास करते रहे हैं।
- जीनोम अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि अंडमान के कबीले इस क्षेत्र में 30,000 वर्ष पहले से रह रहे होंगे।

सुरक्षित क्षेत्रों की स्थापना क्यों?

- 1956 में अंडमान निकोबार द्वीप समूह (आदिवासी कबीलों की सुरक्षा) विनियम भारत सरकार द्वारा निर्गत हुआ था जिसमें इस द्वीप समूह के कबीलों के आधिपत्य वाले पारम्परिक क्षेत्रों को सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया था।

- इस विनियम के द्वारा इन क्षेत्रों में बिना सरकारी अनुमति के कोई नहीं जा सकता है। यहाँ आदिवासियों का छायाचित्र खीचना अथवा फिल्म बनाना भी दंडनीय है।
- कालान्तर में इन विनियमों में सुधार भी होते रहे हैं जिन सब का उद्देश्य दंड-विधान को और भी कठोर बनाना रहा है।
- अभी हाल ही में कुछ द्वीपों के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट में ढील दी गई थी।
- भारत सरकार ने सेंटिनल द्वीप और 28 अन्य द्वीपों को 21 दिसम्बर, 2022 तक प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट से अलग कर दिया है।
- इसका अभिप्राय यह हुआ कि विदेशी लोग इस द्वीप में बिना सरकारी अनुमति के जा सकते हैं।

सेंटिनल आदिवासी संकटग्रस्त क्यों माने जाते हैं?

- यह कहा जाता है कि ये आदिवासी 60,000 वर्षों से कोई प्रगति नहीं कर सके हैं और मछली तथा नारियल के बल पर अभी भी आदिम जीवन जी रहे हैं।
- क्योंकि इनका बाहरी संसार से कोई सम्पर्क नहीं है, इसलिए कीटाणु इन्हें बहुत क्षति पहुँचा सकते हैं।

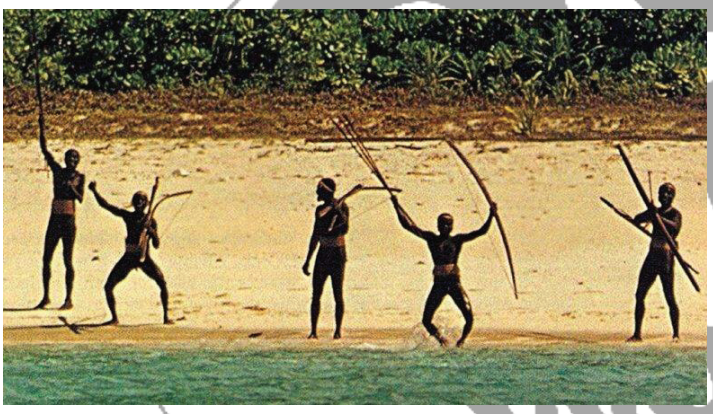

- यदि किसी बाहरी यात्री के साथ साधारण फ्लू का वायरस भी इस द्वीप पर पहुँच जाए तो पूरी प्रजाति का नाश हो सकता है।
- 1960 से इन आदिवासियों तक पहुँचने के छिट-पुट प्रयास हुए हैं परन्तु ये सभी निष्फल रहे हैं, बाहरी व्यक्ति पर ये लोग टूट पड़ते हैं और इस प्रकार जतला देते हैं कि वे अकेले ही रहना चाहते हैं।

प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट (RAP) क्या है?

- प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट **(Restricted Area Permit – RAP)** की व्यवस्था भारत सरकार के एक आदेश के द्वारा 1963 में स्थापित की गई थी।
- इस आदेश के अनुसार विदेशी लोगों को सुरक्षित अथवा प्रतिबंधित क्षेत्र में तब तक जाने नहीं दिया जाता है जब तक सरकार को यह न लगे कि उनकी यात्रा हर प्रकार से उचित है।
- भूटान के नागरिक को छोड़कर किसी और देश का नागरिक सुरक्षित अथवा प्रतिबंधित क्षेत्र में यदि प्रवेश करना और वहाँ ठहरना चाहता है तो उसको सक्षम पदाधिकारी द्वारा विशेष परमिट लेना होगा।
- अफगानिस्तान, चीन और पाकिस्तान के नागरिकों तथा पाकिस्तानी मूल के विदेशियों को प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट दिया ही नहीं जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र

बिजनेस इनसाइडर (22 Nov.)

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में 20 नवम्बर, 2018 को अंतर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष केंद्र (International Space Station – ISS) 20 वर्ष का हो गया।
- इसी दिन 1998 में कजाकिस्तान के बेखनूर अन्तरिक्ष अड्डे से जर्या (सूर्योदय) नामक यह अन्तरिक्ष केंद्र प्रक्षेपित किया गया था। यह अन्तरिक्ष केंद्र रूस ने बनाया था और इसमें अमेरिका का पैसा लगा था।

क्या है?

- अंतर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष केंद्र एक बड़ा अन्तरिक्ष यान होता है जो पृथ्वी की परिक्रमा करता है।
- इसमें कई अन्तरिक्ष यात्री रहते हैं। यह विज्ञान प्रयोगशाला का काम करता है। इसके निर्माण और उपयोग में कई देश शामिल हैं।
- इस अन्तरिक्ष केंद्र के कई हिस्से अन्तरिक्ष यात्रियों ने अन्तरिक्ष में ही जोड़े हैं। यह केंद्र पृथ्वी के ऊपर औसतन 250 मील की ऊँचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करता है।
- इसकी गति 17,500 मील प्रति घंटा है, जिसका अभिप्राय यह हुआ कि यह 90 मिनट में पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।
- नासा इस अन्तरिक्ष केंद्र का उपयोग अन्तरिक्ष में रहने और काम करने के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए करता है जिससे कि भविष्य में मानव को लम्बी दूरियों तक अन्तरिक्ष यात्रा के लिए भेजा जा सके।

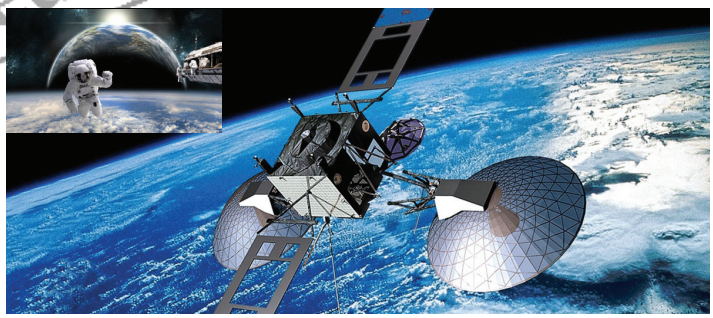

मुख्य बिंदु

- यह नौंवा अन्तरिक्ष केंद्र है। इससे पहले रूस ने Salyut, Almaz और Mir नामक अन्तरिक्ष केंद्र प्रक्षेपित किये थे और अमेरिका ने एक Skylab नामक अन्तरिक्ष केंद्र छोड़ा था।

- अंतर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष केंद्र कार्यक्रम एक संयुक्त परियोजना है जिनमें ये पाँच अन्तरिक्ष एजेंसियाँ प्रतिभागिता कर रही हैं – NASA, Roscosmos, JAXA, ESA और CSA
- इसका स्वामी कौन होगा और कौन इसका उपयोग करेगा इसके लिए अंतर्सरकारी संधियों और समझौतों द्वारा निर्धारित होता है।
- अन्तरिक्ष केंद्र में दो अनुभाग होते हैं – Russian Orbital Segment (ROS) और The United States Orbital Segment (USOS)। परन्तु कई देश इसका लाभ उठाते हैं।

संगाई उत्सव

इंडियन एक्सप्रेस, बिजनेस स्टैण्डर्ड (21 Nov.)

चर्चा में क्यों?

- मणिपुर राज्य प्रत्येक वर्ष 21 से 30 नवम्बर के बीच मणिपुर संगाई उत्सव मनाता है।

क्या है?

- यह मणिपुर में मनाया जाने वाला एक वार्षिक सांस्कृतिक समारोह है।
- इसे राज्य का सबसे भव्य समारोह माना जाता है जो मणिपुर को विश्व श्रेणी का पर्यटन गन्तव्य बनाने में सहायता करता है।
- इस अवसर पर राज्य की पर्यटन संभावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए राज्य की जिन वस्तुओं का मेला लगता है, वे हैं- हस्तशिल्प, हथकरघा, देशी खेलकूद, मणिपुरी खान-पान, संगीत, साहसिक खेलकूद आदि।

भूमिका

- इसका नाम मणिपुर राज्य के राज्य पशु संगाई पर पड़ा है। संगाई एक हिरन का नाम है जो केवल मणिपुर में पाया जाता है।
- यह उत्सव 2010 से चल रहा है और धीरे-धीरे यहाँ संसार भर से लोग मणिपुर की समृद्ध परम्पराओं और संस्कृति को देखने आने लगे हैं।
- इस समारोह के मुख्य आकर्षणों में एक रासलीला है जो भारत के किसी भी नृत्य शैली से अलग है।

- इसके अतिरिक्त यहाँ का कबुई नागा नृत्य, बाँस नृत्य, मैबी नृत्य, लाइ हराओबा नृत्य और खम्बा थोईबी नृत्य प्रसिद्ध हैं।
- यहाँ की युद्ध कला थांग ता सुप्रसिद्ध है जिसमें भाला और तलवार दोनों चलाये जाते हैं।
- एक और प्रसिद्ध खेल जो नारियल से रग्बी की भाँति खेला जाता है, उसे यूबी-लाक्पी कहते हैं। मुक्ना कांगजई खेल हॉकी और कुश्ती का मिश्रण होता है। एक और खेल जो मणिपुर में ही पनपा है, वह है मॉडर्न पोलो।

संगाई हिरन

- संगाई हिरन केवल मणिपुर के केबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान में पाया जाता है।
- IUCN के अनुसार यह एक "संकटग्रस्त प्रजाति" है।

ऑनलाइन पोर्टल शी-बॉक्स

द न्यू इंडियन एक्सप्रेस, बिजनेस स्टैण्डर्ड (22 Nov.)

संदर्भ

- हाल ही में भारत सरकार महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने ऑनलाइन पोर्टल शी-बॉक्स को सभी केन्द्रीय मंत्रालयों, विभागों एवं 33 राज्यों/केंद्र शासित क्षेत्रों के 653 जिलों से जोड़ दिया है।
- यह पोर्टल कार्यस्थल में यौन-उत्पीड़न की शिकायत को प्रतिवेदित करने के लिए बना है।
- अब हर मामला सीधे सम्बन्धित सक्षम अधिकारी- केन्द्रीय/राज्य के पास पहुँच जाएगा और इस प्रकार शिकायतों का त्वरित निपटारा हो सकेगा।
- शी-बॉक्स में प्रतिवेदित मामलों पर शिकायतकर्ता स्वयं और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भी नजर रख सकेंगे जिससे बाद के निष्पादन में लगने वाला समय घट जायेगा।

क्या है?

- एक ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणाली है जिसमें कार्यस्थल पर होने वाले यौन-उत्पीड़न की शिकायतें अंकित की जाती हैं।
- इसका अनावरण महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा किया गया है।

- इस पोर्टल का उद्देश्य महिलाओं का कार्यस्थल पर यौन-उत्पीड़न (रोकथाम प्रतिबन्ध एवं समाधान) अधिनियम, 2013 के प्रावधानों को लागू करना है।
- इसमें जैसे ही कोई शिकायत इस पोर्टल पर आयेगी उसे सीधे उस संबंधित मंत्रालय/विभाग/लोक उपक्रम/स्वायत्त निकाय आदि की आंतरिक शिकायत समिति को भेज दिया जाएगा।
- जब तक शिकायत का निपटारा नहीं होता है तब तक उसकी प्रगति को शिकायतकर्ता पोर्टल पर देख सकता है।

महत्व

- इसका निर्माण इसलिए किया गया है कि कार्यस्थल पर होने वाले यौन-उत्पीड़न के बारे में महिलाएँ शिकायत कर सकें।
- कार्यस्थल की परिभाषा में केन्द्रीय मंत्रालय, विभाग, लोक उपक्रम, स्वायत्त निकाय, संस्थान आदि सभी कार्यालय आते हैं।

वज्र प्रहार संयुक्त युद्धाभ्यास

टाइम्स ऑफ इंडिया (21 Nov.)

संदर्भ

- हाल ही में भारत व अमेरिका की सेना के संयुक्त युद्धाभ्यास वज्र प्रहार-2018 का 19 नवम्बर, 2018 को आरंभ हुआ।
- यह युद्धाभ्यास 2 दिसम्बर, 2018 तक चलेगा।
- यह एशिया की सबसे बड़ी व सेना की दक्षिण-पश्चिमी कमान द्वारा विश्व स्तरीय ट्रेनिंग नोड के रूप में स्थापित की गई महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में भारत व अमेरिका की सेना संयुक्त युद्धाभ्यास कर रही है।

- एशिया की सबसे बड़ी व सेना की दक्षिण-पश्चिमी कमान द्वारा विश्व स्तरीय ट्रेनिंग नोड के रूप में स्थापित की गई महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में एक बार फिर भारत व अमेरिका की सेना संयुक्त युद्धाभ्यास कर रही है।

क्या है?

- इस युद्ध अभ्यास में अमेरिकी सेना का प्रतिनिधित्व अमेरिकी प्रशांत कमांड के स्पेशल फोर्सेज ग्रुप द्वारा किया जा रहा है।
- इस अभ्यास में 12 दिन तक अर्धमरुस्थलीय तथा ग्रामीण परिवेश में प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- इससे दोनों देशों की सेनाओं के बीच इंटर-ओपेराबिलिटी और सैन्य सहयोग में वृद्धि होगी।

- इस अभ्यास द्वारा दोनों देशों की सेनाएं बंधकों को छुड़ाने, मरुस्थलीय परिस्थिति में स्वयं को ढालने तथा कॉम्बैट फायरिंग का अभ्यास करेंगी।

मुख्य बिंदु

- प्रशिक्षण की समाप्ति के बाद तीन दिवसीय आउटडोर अभ्यास का आयोजन किया जायेगा।
- 'वज्र प्रहार' भारत-अमेरिकी विशेष बल का एक संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास है, जो दोनों देशों में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है।
- इसमें भारतीय सेना के दक्षिणी कमान पुणे की विशेष बल टीम के 45 सदस्यों ने अमेरिकी सैनिकों के साथ अभ्यास किया।
- इस संयुक्त सैन्य अभ्यास का आयोजन वर्ष 2010 से किया जा रहा है।
- इस अभ्यास का पिछला संस्करण मार्च, 2017 में जोधपुर (राजस्थान) में आयोजित हुआ था।

आकाशगंगा में नए तारामंडल की खोज

साइंस डेली (21 Nov.)

संदर्भ

- हाल ही में वैज्ञानिकों ने मिल्की वे आकाशगंगा में एक नए और विशाल तारामंडल की मौजूदगी का पता लगाया गया है।
- यह सुपरनोवा स्थिति में पाया गया है लेकिन यह तारामंडल उन मौजूदा सिद्धांतों को चुनौती देता है कि बड़े सितारों का अस्तित्व अंतत: कैसे खत्म हो जाता है।

मुख्य बिंदु

- वैज्ञानिकों ने गामा रे बर्स्ट प्रोजेनिटर सिस्टम का पता लगाया जो एक तरह का सुपरनोवा है।
- इस सुपरनोवा से प्लाज्मा की काफी शक्तिशाली और संकरी धारा निकलती रहती है।
- ऐसा माना जाता है कि यह केवल ऐसी आकाशगंगाओं में मिलता है जो बहुत दूरी पर हैं।
- इस तारामंडल के बारे में विस्तार से नेचर एस्ट्रोनोमी पत्रिका में बताया गया है और इसे एपेप (Apep) नाम दिया गया है।
- इस खोज में नीदरलैंड इंस्टिट्यूट फॉर रेडियो एस्ट्रोनॉमी, द यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी, यूनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग, यूनिवर्सिटी ऑफ शेफील्ड तथा यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स के वैज्ञानिक शामिल थे।

क्यों है खास?

- वैज्ञानिकों का मानना है कि एपेप एक धूल भरा गुबार है जो अन्य सुपरनोवा की तुलना में अधिक धीमा है।
- यह तारामंडल पृथ्वी से 8,000 प्रकाश वर्ष दूर है लेकिन इसका धीमी गति से घूमना वैज्ञानिकों को सितारों के अस्तित्व के समाप्त होने पर पुन: विचार करने का अवसर देगा।
- वैज्ञानिकों का मानना है कि जितनी इसकी चमक है उसको देखते हुए यह बात चौंकाने वाली है कि अब तक इसके बारे में पता क्यों नहीं चला।

सुपरनोवा

- खगोलशास्त्र में सुपरनोवा किसी तारे की मृत्यु के समय होने वाले भयंकर विस्फोट को कहते हैं।
- सुपरनोवा इतना शक्तिशाली होता है कि इससे निकलता प्रकाश और विकिरण (रेडीएशन) कुछ समय के लिए अपने आगे पूरी आकाशगंगा को भी धुंधला कर देता है।
- सुपरनोवा के समय अधिकतर तारे 1,000 किलोमीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से घूमते हैं।
- तारों का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान से भी अधिक होता है इसलिए यह उसे संभाल पाने में असहज हो जाते हैं जिसके कारण यह तीव्र रेडियो एक्टिव तरंगो तथा एक्स-रे तरंगों के साथ घूर्णन करने लगते हैं।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के मध्य समझौता

बिजनेस स्टैण्डर्ड, इकनॉमिक टाइम्स (22 Nov.)

संदर्भ

- हाल ही में भारत और ऑस्ट्रेलिया ने एग्रीकल्चरल रिसर्च (कृषि शोध) और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग और निवेश बढ़ाने के लिए पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपनी ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरीसन से सिडनी में मुलाकात की। ऑस्ट्रेलिया की यात्रा करने वाले वे पहले भारतीय राष्ट्रपति हैं।

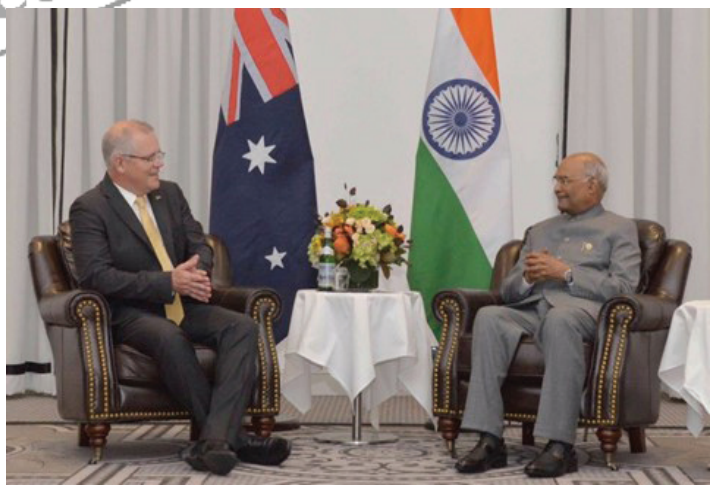

GS World Committed To Excellence

पांच समझौते क्या है?

- पहला समझौता अशक्तता क्षेत्र के लिए है। इसके तहत विशेष तौर पर सक्षम लोगों के लिए सेवाओं को बेहतर किया जाएगा।

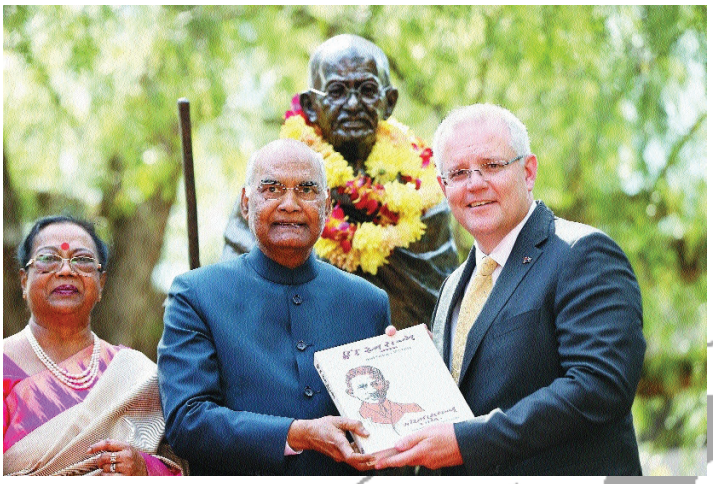

- दूसरा समझौता दोनों देशों के बीच व्यापार में द्विपक्षीय निवेश बढ़ाने के लिए इंवेस्ट इंडिया और ऑस्ट्रेड के बीच किया गया है।
- तीसरा समझौता केंद्रीय खनन योजना एवं डिजाइन संस्थान, रांची और कॉमनवेल्थ साइंटिफिक एंड रिचर्स ऑर्गेनाइजेशन, कैनबरा के बीच आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए किया गया है।
- चौथा समझौता आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय गुंटूर और यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया, पर्थ के बीच कृषि शोध में सहयोग बढ़ाने के लिए हुआ है।
- पांचवा समझौता इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगकी संस्थान दिल्ली और क्वींसलैंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ब्रिसबेन के बीच संयुक्त पीएचडी के लिए हुआ है।

मुख्य बिंदु

- भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और अगले 20 सालों तक किसी अन्य एक बाजार के मुकाबले यहां ऑस्ट्रेलिया के लिए ढेरों अवसर मौजूद हैं।
- ऑस्ट्रेलिया के व्यापार मंत्री सिमॉन बर्मिंघम ने कहा कि हम व्यापक आर्थिक सहयोग पर काम करेंगे।
- हम 10 राज्य और 10 क्षेत्रों पर अपना विशेष ध्यान देंगे। हम भारत में अपने व्यापार को विस्तार करने में मदद करेंगे।
- अगले साल ऑस्ट्रेलिया-भारत रणनीतिक अनुसंधान कोष 5,00,000 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का अनुदान देगा।

GS World
Committed To Excellence